: तृतीय अध्याय :

"विवेच्य कहानियों में नारी संवेदना के विविध स्तरों का चित्रण"

नारी को अपने जीवन में अनेक स्तरों से गुजरना पड़ता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक उसका संबंध विविध परिवेश और स्थितियों से होता है। नारी को इन स्तरों में रहकर जीवन के विविध अनुभवों को ग्रहण करना पड़ता है। प्रत्येक नारी अलग-अलग स्तरों से संबंध रखती है और इन स्तरों में उसे अलग-अलग अनुभव मिलते हैं।मन्नू भंडारी ने नारी से संबंधित इन्हीं स्तरों को अलग-अलग कहानियों में चित्रित किया है। इन स्तरों में नारी की क्या अवस्था है,इसका बड़ा सजीव चित्रण किया गया है।

3.1 नारी की सामाजिक स्थिति एवं स्थान :-

मन्नू भंडारी की कई कहानियों में नारी की सामाजिक स्थिति एवं स्थान का सही-सही चित्रण मिलता है। समाज नारी को विभिन्न परिस्थितियों में अनेक दृष्टिकोणों से देखता है। इन्हीं विभिन्न परिस्थितियों में नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण स्पष्ट होता है।

कहानी 'ईसा के घर इंसान' में किसी स्त्री को नन बनने के लिए किस तरह मजबूर किया जाता है, इस बात को चित्रित किया गया है। औरतों को नन बनाने के नाम पर पादरी उन पर बहुत से अत्याचार करता है। उन्हें अपनी हवस का शिकार बनाता है। स्त्री नन बनने के लिए तैयार है कि नहीं, उसकी इच्छा क्या है ? इस बात का कतई विचार नहीं किया जाता। लूसी और जूली दोनों भी पादरी के अत्याचार को भोग चुकी हैं। इसी कारण उनका जीवन अत्यंत उत्साहहीन और नीरस बन चुका है। एंजिला नामक अत्यंत सुंदर युवती को जबरदस्ती चर्च में लाया जाता है। वह इस अत्याचार का विरोध करते हुए कहती है - "मैं अपनी जिंदगी को, अपने इस रूप को चर्च की दीवारों में नष्ट नहीं होने दूँगी। मैं जिंदा रहना चाहती हूँ, आदमी की तरह जिंदा रहना चाहती हूँ। मैं इस चर्च में घुट-घुट कर नहीं मरूँगी ---।"[1] एंजिला अपनी जिंदगी मजे में अर्थात खुले आसमान में बिताना चाहती है। उसे यहाँ कैदी बन कर रहना पसंद नहीं है, क्योंकि यहाँ औरतों की नारी सुलभ भावनाओं को कुचला जाता है। समाज, धर्म के नाम पर

1. मन्नू भंडारी - मैं हार गई, पृष्ठ. 17

स्त्रियों को आम जिंदगी बसर करने की आज्ञा नहीं देता। परंतु स्त्री भी इन अत्याचारों का खुलकर विरोध करती है और इन बंधनों से मुक्त होने का सफल प्रयास करती है। एंजिला पादरी के जुल्म का पर्दाफाश करके स्वयं को तो मुक्त करती ही है, साथ में अन्य युवतियों को भी मुक्ति का मार्ग दिखाती हैं।

'गीत का चुंबन' नामक कहानी में यह चित्रित किया गया है कि समाज हमेशा से स्त्रियों को केवल भोग की वस्तु ही समझता आया है। इस कहानी का नायक निखिल भी ऐसा ही विचार रखता है। निखिल की जिंदगी में ऐसी बहुत-सी लड़कियाँ हैं, जिन्होंने उसे अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया है। कहानी की नायिका जो एक गायिका है। कुनिका की दोस्ती जब निखिल से होती है, तो वह कुनिका से भी वही सब कुछ पाना चाहता है। परंतु कुनिका के विचार कुछ और हैं। वह स्त्री-पुरूष के संबंधों में मर्यादा आवश्यक मानती है। एक दिन आवेश में आकर निखिल कुनिका का चुंबन ले लेता है। कुनिका एकदम काँप जाती है और कहती है, "यह क्या किया तुमने ? बदतमीज कहीं के !"[1] इस पर निखिल कहता है - "नाराज हो गई, इतनी सी बात से ?"[2] कुनिका, निखिल को डाँटती है - "तुम्हारे लिए यह जरा-सी बात होगी, मेरे लिए नहीं। तुमने मुझे क्या ऐसी-वैसी लड़की ही समझ रखा है ? जानते नहीं, मुझे यह सब जरा भी पसंद नहीं, जरा भी नहीं।"[3] अपने इस व्यवहार से कुनिका बतलाती है कि स्त्री कोई इस्तेमाल करने की चीज नहीं है, वह समाज में मर्यादा से रहना जानती है।

'दीवार बच्चें और बरसात' मे एक पढ़ी-लिखी स्त्री का परंपरा से हटकर चलना चित्रित किया गया है। स्त्री का पढ़ा -लिखा होना समाज को अच्छा नहीं लगता। समाज स्त्री की काबिलियत को चरित्रहीनता का नाम देता है।

इस कहानी की नायिका रानी बीबी पढ़ी-लिखी औरत है। पढ़ी-लिखी होने के कारण वह स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है। परंतु पति के विचार संकुचित हैं, रानी बीबी को घर के बाहर कदम रखने नहीं देता। रानी बीबी किसी स्कूल में नौकरी करना चाहती है। किंतु पति आज्ञा नहीं देता। एक दिन जब दोनों में जोरो का झगड़ा होता है तो उसका पति उसे घर से बाहर निकला देता है। वह भी एक पल

---

1. मन्नू भंडारी -मैं हार गई, पृष्ठ. 28
2. वही, पृष्ठ. 28
3. वही, पृष्ठ. 29

वहाँ नहीं रूकती और पति का घर छोड़कर चली जाती है। रानी बीबी का घर से जाना मोहल्ले के लिए ताजा समाचार बन जाता है और रानी-बीबी की बुराई की जाती है। यह बात उठाई जाती है कि रानी बीबी किसी अन्य पुरूष के साथ भाग गई। इस कहानी में समाज द्वारा रानी बीबी को बदनाम किया जाता है। उस पर चरित्रहीन होने का आरोप लगाया जाता है। इस विषय में हेमलता गाडे अपने लघु शोध प्रबंध में लिखती हैं कि - ''इसमें पारंपारिक सामाजिक मूल्यों से बंधी नारियों में शिक्षित नारी के संबंध में कैसी चर्चा होती है, इस बात का चित्रण है ।----कहानी में लेखिका ने यह स्पष्ट किया है आज की शिक्षित नारी अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व और अस्तित्व की रक्षा के लिए हमेशा संघर्ष करती रहती है।''[1] इस कहानी में यह चित्रित किया गया है कि जिस तरह छोटे से अंकुर के कारण एक बड़ी दीवार गिर जाती है, उसी तरह एक औरत भी एक छोटे -से कदम द्वारा परंपरा को तोड़ सकती है। परंतु यह छोटा कदम समाज में खलबली मचा देता है और समाज इस साहस को गलत मानता है।

'आते-जाते यायावार' में यह चित्रित किया गया है कि समाज किस तरह परंपरा को तोड़ना, लीक से हटना इन सब के नाम पर स्त्रियों के साथ विवाहित होते हुए भी स्वच्छंदता से विचरण करता है। पुरूष इस लीक को तोड़ने के भ्रम में भटकता रहता है। परंतु उसे कहीं भी सुख प्राप्त नहीं होता। संस्कार तोड़ने के बहाने अनेक स्त्रियों को तोड़ा जाता है। इस कहानी की नायिका मिताली की मूलाकात नरेन से होती है। वह कभी भी एक जगह नहीं टिकता। उसके जीवन में बहुत-सी लड़कियाँ आ चूकी हैं। वह हर बार एक स्त्री को छोड़कर दूसरी स्त्री के साथ संबंध रखता है। इसे वह लीक से हटना कहते कहता है। मिताली मन ही मन सोचती है - ''पर मैं एकाएक ही बहुत कटु हो आई। मन हुआ कहूँ 'लीक तोड़ना' संस्कारों से मुक्त होना, उन सारे मुहावरों को चारा डालना के लिए कैसी खूबसूरती से प्रयोग किया जाता है आजकल। पर कहा केवल एक निहायत ही पिटा-पिटाया वाक्य - ''लीक तोड़कर ही आदमी क्या बहुत कुछ पा लेता है ?''[2]

मिताली इस तरह के लोगों से परेशान है, जो अपने स्वार्थ के लिए बहुत-सी स्त्रियों को बर्बाद करते हैं। लीक से हटने के नाम पर समाज में अत्याचार फैलाते हैं। ऐसे समाज में नारी की 'भोग्य

---

1. हेमलता गाडे - मन्नू भंडारी के कथात्मक साहित्य में चित्रित समस्याएँ, पृष्ठ. 24

2. मन्नू भंडारी - त्रिशंकु, पृष्ठ -11

वस्तु' जैसी स्थिति हो जाती है। मन्नू भंडारी की अन्य कहानियों में भी नारी की सामाजिक स्थिति एवं स्थान का चित्रण हुआ है -जैसे 'स्त्री सुबोधिनी', 'रानी माँ का चबूतरा', 'अकेली' आदि।

समाज में नारी की स्थिति में पूर्णत: बदलाव नहीं आया। इस बात की पुष्टि मन्नू भंडारी की ये कहानियाँ करती हैं। समाज में पढ़ी-लिखी स्त्री के व्यवहार को चरित्रहीन बताता है। नारी को केवल एक भोग्य वस्तु मानता है।

3.2 परिवार में नारी की स्थिति :-

मन्नू जी की ऐसी बहुत-सी कहानियाँ हैं, जिनमें परिवार में नारी की स्थिति का चित्रण इतने प्रभावशाली ढंग से किया गया है कि पाठक उसे पूर्ण रूप से तादात्म्य स्थापित करता है। मन्नू भंडारी ने अधिकतर कहानियों में पारिवारिक जीवन का चित्रण किया है। परिवार में नारी का महत्त्व कितना है ? नारी उसे कैसे स्वीकारती है ? परिवारों में चलता आतंरिक संघर्ष, नारी का स्थान, परिवार में नारी स्वातंत्र्य, परिवार में नारी के निर्णय की मान्यता ? आदि विषय विवेच्य कहानियों में उभर कर सामने आए हैं।

मन्नू भंडारी की 'सयानी बूआ' ऐसी स्त्री की कहानी है जो घर में कदम-कदम पर सुव्यवस्था रखने के लिए आग्रही रहती है। इस व्यवस्था को लेकर उसके सर पर पागलपन सवार है। इसी कारण वह अपने पति और बच्ची से कठोरता से पेश आती है। घर में सबकी दिनचर्या समय में बँधी रहती है और जिसकी सुई सयानी बूआ के हाथों में रहती है। उनकी बेटी अन्नू को पाँच साल की छोटी-सी उम्र में सुबह पाँच बजे उठना पड़ता है। वह माँ के रवैये से भयभीत है। अन्नू का खाना-पीना, सोना, पहनना, ओढना, खेलना सब माँ के अनुसार होता हैं। इस बात का पता इस कथन से होता है - ''वह नन्ही सी उमर में ही प्रौढ हो गयी थी। न बच्चों का सा उल्लास, न कोई चहचहावट। एक अज्ञात भय से वह घिरी रहती थी।''[1] माँ के ऐसे व्यवहार के कारण अन्नू सामान्य जीवन जीने का मजा नहीं चख पाती। उसे अन्य बच्चों की तरह माँ का दुलार, ममता, खेलना-कूदना, शरारते करना, चटपटी चीजें खाना, बतियाना इत्यादि बातों से वंचित रहना पड़ता है। यही सब बातें बचपन को कितना सुनहला बना देती हैं, जिसे कोई भी व्यक्ति खोना नहीं चाहता। इसी कारण अन्नू अपने ही घर में समय से बँधी मशीन बन जाती है। ऐसे माहोल में एक

---

1. मन्नू भंडारी - मैं हार गई, पृष्ठ. 67

दिन अन्नू बीमार पड़ जाती है। उसकी बीमारी का कारण स्वयं सयानी बूआ ही है। इसकी पुष्टि इन कथन से होती है - ''मानो उसके शरीर में ज्वर के कीटाणु नहीं, बुआजी के भय के कीटाणु दौड़ रहे हैं, जो उसे ग्रसते जा रहे हैं।''[1] सयानी बूआ जैसी बहुत-सी स्त्रिया हैं जो अपने बच्चों को मुक्त जीवन जीने नहीं देती, उनका बचपन उनसे छीनती हैं।

मन्नू भंडारी की 'त्रिशंकु' कहानी में ऐसी औरत का चित्रण किया गया है, जो केवल अपनी प्रतिष्ठा के लिए अपने विचारों, वसुलों को तोड़ती, मरोड़ती है। इस स्त्री की बेटी तनू अपनी माँ के दोहरे विचारों में पीसकर रह जाती है।

तनू की माँ उसकी दोस्ती उन लड़कों से करवाती है, जो उनके घर के सामने खड़े होकर तनू पर फब्तियाँ कसते हैं। तनू माँ के इस व्यवहार से चकित हो जाती है। वह सोचती है -''कोई और माँ होती तो फेटा कसकर निकल जाती और उनकी सात पुश्तों को तार देती। पर माँ पर जैसे कोई असर ही नहीं।''[2] इसी दोस्ती में तनू शेखर नामक लड़के से प्रेम करने लगती है। परंतु माँ को जब यह बात मालूम होती है तो वह उसे बहुत डाँटती है। तनू समझ नहीं पाती कि माँ आखिर क्या चाहती है ? माँ ने स्वयं प्रेम विवाह किया है और वह भी अपने पिताजी से अच्छा खासा विरोध करके। तनू कहती है -''खुद तो लीक से हटकर चली थीं ---सारी जिंदगी इस बात की घुट्टी पिलाती रहीं, पर मैंने जैसे ही अपना पहला कदम रखा, घसीटकर मुझे अपनी ही खींची लीक पर लाने के दंद-फंद शुरू हो गये।''[3] तनू अपनी मम्मी से इस विषय में बहस करना चाहती है। उसका मानना है कि -''इतने ही बंधन लगाकर रखना था, तो शुरू से वैसे पालती क्यों ? झूठ-झूठ आजादी देने की बातें करती, सिखाती रहीं।''[4] तनू का उन लड़कों से मिलना-जुलना उसकी मम्मी बंद करवा देती है। परंतु एक दिन तनू देखती है कि मम्मी ने उन लड़को को घर पर बुला रखा है और उन्हें बड़े प्यार से खाना खिला रही हैं। माँ के इस बदलते व्यवहार से वह माँ के सही रूप को पहचानने में असमर्थ हो जाती है। इसीलिए वह सोचती है - ''नाना पूरी तरह नाना थे - शत-प्रतिशत-

---

1. मन्नू भंडारी - मैं हार गई, पृष्ठ. 68
2. मन्नू भंडारी - त्रिशंकु, पृष्ठ. 68
3. वही, पृष्ठ. 80-81
4. वही, पृ. 81

और इसी से ममी के लिए लड़ना कितना आसान हो गया होगा। पर इन ममी से लड़ा भी कैसे जाए, जो एक पल नाना होकर जीती हैं, तो एक पल ममी होकर।''[1] माँ के इस त्रिशंकु गत रवैये से तनू परेशान हो जाती है। इस कहानी के विषय में हेमलता गाडे ने अपने लघु शोध प्रबंध में यह मन्तव्य दिया है कि - ''आधुनिक पीढ़ी स्वयं को कितनी ही आधुनिक तथा नये विचारों की समझ लें, फिर समय आने पर उनका वही दकियानूसी विचार उभर कर हमारे सामने आ जाता है।''[2] आधुनिकता के नाम पर दोहरी जिन्दगी जीनेवालों के व्यवहार से एक किशोर अवस्था की स्त्री किस प्रकार घुटन महसूस करती है, इसका सही चित्रण इस कहानी में मिलता है।

मन्नू भंडारी की 'आकाश के आईने में' कहानी में परिवार में विद्यमान व्यवहार कुशलता का चित्रण हुआ है। लेखा विवाहित और नौकरी पेशा नारी है। शहर के भाग-दौड के वातावरण में बहुत कमजोर हो जाती है। इसलिए वह पति के कहने पर हवा पानी बदलने के उद्देश्य से अपने ससुराल, जो एक छोटा-सा गाँव है, आती है। गाँव में उसका बड़ा परिवार है, जिसमें उसके सास-ससूर, जेठ-जेठानी, ननद और दो देवर हैं। लेखा को वहाँ के माहोल में घुटन महसूस होने लगती है। लेखा की सास घर की आर्थिक स्थिति को लेकर बार-बार उसके सामने पैसों की तंगी जाहीर करती है। घर की सारी जिम्मेदारी वह लेखा और दिनेश पर डालना चाहती है। लेखा की जेठानी उसे ताने मारती हुई कहती है - ''कलकत्ता के सैर-सपाटे छोड़कर कौन इस घनचक्कर में फँसेगा। यह तो हमारे ही खोटे भाग हैं, जो रात-दीन कोल्हू के बैल की तरह पिले रहते हैं।''[3] लेखा के ससुर भी उससे शिकायत के लहजे में बात करते हैं। उसके देवर और ननद स्वयं को घर पर बोझ समझते हैं। लेखा उनके दु:ख को बाँटना चाहती है। परंतु वे लेखा को कोई मौका नहीं देते। ऐसे तनावपूर्ण वातावरण में उससे रहा नहीं जाता। वह महसूस करती है कि - ''जैसे इन सबके बीच वह बहुत परायी है। उस घर की एक सदस्या होकर भी वह घर से अलग है। यहाँ आकर उसे बारबार ही लगता रहा है जैसे वह बहुत फिजूलखर्च है, जैसे उसका बहुतसा कर्तव्य इस घर और घर के व्यक्तियों के प्रति है, पर जिसे वह पूरा नहीं कर रही है।''[4]

---

1. मन्नू भंडारी - त्रिशंकु, पृष्ठ. 81
2. हेमलता गाडे - मन्नू भंडारी के कथात्मक साहित्य में चित्रित समस्याएँ, पृष्ठ .75
3. मन्नू भंडारी - त्रिशंकु, पृष्ठ. 134
4. वही, पृष्ठ. 141

लेखा शहर के वातावरण से दूर रहने के लिए कुछ दिन गाँव में रहना चाहती है। परंतु घर के इस वातावरण में उसका मन घुटने लगता है। वह अपनों के बीच रहकर भी अपनों से बहुत दूर है।

मन्नू जी की 'अकेली' में चित्रित परिवार में नारी की स्थिति इस ढंग से चित्रित की गई है कि इस कहानी की सोमा बूआ का दुःख अपना खुद का लगता है।सोमा बूआ अपने जवान बेटे को खो चुकी है। इसीलिए वह घर में अकेली है। उसके पति ग्यारह महीने घर से बाहर रहकर तीर्थ यात्रा करते हैं। सोमा बूआ अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए पास-पड़ोसियों के उत्सवों, त्यौहारों में शामिल होकर अपना दुःख करने का प्रयास करती है। परंतु जब उसके पति एक महीने के लिए घर आते हैं तो सोमा बूआ को कहीं बाहर जाने को नहीं मिलता, क्योंकि उसके पति को ये सब पसंद नहीं है। कहानी के इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है - "उस समय उनका घुमना-फिरना, मिलना-जुलना बंद हो जाता और सन्यासी जी महाराज से यह भी नहीं होता है कि दो मीठे बोल बोलकर सोमा बूआ को एक ऐसा सम्बल ही पकड़ा दे जिसका आसरा लेकर वे उनके वियोग के ग्यारह महनी काट दे।"[1] सोमा बूआ का पति उसे समझने की कोशिश भी नहीं करता। पति के आते ही उन दोनों में छोटे-मोटे झगड़े शुरू हो जाते हैं। पति द्वारा दुर्लक्षित होने के कारण सोमा बूआ का दुख और अधिक बढ़ जाता है। सोमा बूआ अपने पति का दुखड़ा रोते हुए कहती है - "सुनने को सुनती ही हूँ, पर मन तो दुखता ही है कि एक महीने को आते हैं तो भी कभी मीठे बोल नहीं बोलते। मेरा आना-जाना इन्हें सुहाता नहीं ------सारा धरम-करम ये ही लूटेंगे, सारा जस ये ही बटारेंगे और मैं अकेली पड़ी पड़ी यहाँ इनके नाम को रोया करूँ। उस पर से कहीं आऊँ-जाऊँ वह भी तो इनसे बर्दाश्त नहीं होता ---- ।"[2] सोमा बूआ के परिवार के नाम पर बस उनके पति ही हैं। परंतु वे भी न के बराबर ही। इसी कारण सोमा बूआ अपने परिवार में अकेली, अकेलापन दूर करने का प्रयास करती है।

मन्नू जी द्वारा लिखित 'एक कमजोर लड़की की कहानी' में ऐसी स्त्री का चित्रण किया है जिसके जीवन के फैसले हमेशा उसके पिता ही करते आए हैं। उसे कभी भी स्वयं निर्णय लेने नहीं दिया और न उसकी किसी इच्छा, आकांक्षा का ख्याल रखा गया।

---

1. मन्नू भंडारी - श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ. 54
2. वही, पृष्ठ. 56

रूप अपनी माँ को खो चुकी है। उसके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया है। रूप के पिता उसका स्कूल छुड़वाकर घर में पढ़ाई शुरू करवा देते हैं, जबकि रूप की इच्छा नहीं है कि वह स्कूल छोड़कर घर में पढ़े। इसका परिणाम यह हुआ कि रूप की सौतेली माँ ने घर का सारा काम उसको सौंप दिया। रूप की पढ़ाई घर पर ठीक ढंग से नहीं होती। इसीलिए उसके पिता, उसे मामा के घर भेजने का निर्णय लेते हैं। परंतु रूप अपना घर छोड़कर मामा के पास नहीं जाना चाहती। उसे लगता है कि वह अपने ही घर में पराई हो गई है। शायद इसीलिए उसे घर से निकाला जा रहा है। वह मन ही मन कहती है - ''मैं नहीं जाऊँगी मामा-बामा के यहाँ। अपना घर क्यों छोड़ूँ, स्कूल भी छुड़वा दिया, इतना काम भी करती हूँ, फिर भी ये लोग मुझे अपने घर नहीं रखना चाहते। ----मैं इतनी पराई हो गई, इतनी बुरी हो गई कि घर में भी नहीं रखा जाता। ऐसा ही है तो मुझे मार डालो पर मैं जाऊँगी नहीं !''[1]

परंतु रूप को अपनी इच्छा के विरूद्ध मामाजी के घर जाना ही पड़ता है। रूप मामाजी के घर मामा और मामी का इतना प्यार पाती है कि जल्द वहाँ घुल-मिल जाती है। वही रूप ललीत नाम के युवक से प्रेम कर बैठती है। वे दोनों शादी भी करना चाहते हैं। परंतु पिताजी के कारण रूप को किसी वकील से विवाह करना पड़ता है। रूप को अपने जीवन में कभी पूर्ण रूप से सुख नहीं मिलता। वह जो कुछ भी करना चाहती है, कर नहीं पाती। पिता के द्वारा लिये गए निर्णयों के सामने उसे चुपचाप बैठना पड़ता है। वह अपना जीवन पिता के अनुसार ही बिता सकती है। उसे कैसा जीवन जीना है, यह उसके हाथ में नहीं है।

'दीवार बच्चें और बरसात' में एक पढ़ी-लिखी स्त्री के विचारों को पति द्वारा माना नहीं जाता। पति को अपनी पत्नी का नौकरी करना अच्छा नहीं लगता। कहानी की नायिका रानी जब एक दिन घर जरा देर से लौटती है तो उसका पति उसे मारता हुआ कहता है कि - ''निकल जा, मेरे घर से। जिन यार-दोस्तों में घुमती फिरे है, उन्हीं के घर जाकर बैठ''[2] पत्नी के देर से लौटने पर पति उसके चरित्रपर लांच्छन लगाता है। एक पत्नी के विषय में डॉ. ममता शुक्ला अपनी पुस्तक 'मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन' में लिखती हैं - ''आज की नारी का व्यक्तित्व स्वतंत्र है। वह अपने

---

1. मन्नू भंडारी - मैं हार गई, पृष्ठ. 44

2. वही, पृष्ठ. 100

13528
A

कार्य में ज्यादा हस्तक्षेप पसंद नहीं करती। नारी, पुरूष को पति के रूप में ही नहीं, मित्र के रूप में भी पाना चाहती है।''[1] परंतु बहुत कम ही पति, अपनी पत्नी के अच्छे मित्र बन पाते हैं।

मन्नू भंडारी की 'क्षय' एक ऐसी युवती की कहानी है, जो पिता की बीमारी के कारण नौकी करती है। वह बड़ा ही रूक्ष जीवन व्यतीत करती है। कहानी की नायिका कुंती के परिवार में उसके बीमार पिता, एक छोटा भाई, जो दूसरे शहर में पढ़ता है। वह एक लड़की को उसके घर जाकर ट्यूशन भी देती है और स्कूल में पढ़ाती भी है। वह घर की जिम्मेदारी उठाते-उठाते ऊब-सी गई है। बँधा-बँधाया रोज का एक जैसा जीवन नीरस बन गया है। वह केवल दूसरों के लिए जीए जा रही है। स्वयं के लिए उसके पास समय नहीं है। इन जिम्मेदारियों से लदी इस भाग दौड की जिंदगी में कुन्ती को खाँसते-खाँसते ऐसे लगने लगता है कि शायद वह भी क्षय ग्रस्त हो गई है। इस कहानी के विष्या में भैरुलाल गर्ग अपनी पुस्तक 'स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कहानी में समाज परिवर्तन' में अपना मत देते हुए लिखते हैं - '''क्षय' कहानी में पिता के क्षय ग्रस्त हो जाने पर नवयुवती लड़की को परिवार की सारी देखभाल करनी पड़ती है, उसकी सारी आकांक्षाएँ विलीन हो जाती है। उसे सब कुछ छोड़कर परिवार चलाने के लिए अध्यापिका बनना पड़ता है। परिस्थितियों से घबरायी कुंती अपने क्षयग्रस्त पिता की बीमारी से अपनी तुलना करती है। ----प्रस्तुत कहानी एक संघर्षरत युवती की कहानी है, जो परिस्थितियों से लड़ते-लड़ते टूटती हुई प्रतीत होती है।''[2] मन्नू भंडारी लिखित अन्य कहानियों में भी नारी की पारिवारिक स्थिति का चित्रण हुआ है। ये कहानियाँ हैं - 'सजा', 'नकली हीरे', 'कील और कसक', 'नशा', 'संख्या के पार', 'नई नौकरी' आदि।

इस प्रकार उपर्युक्त कहानियों के द्वारा यह सिद्ध होता है कि अपने परिवार में नारी की क्या स्थिति है ? कहीं वह अपनी माँ के दोहरे व्यक्तित्व से त्रासित हे, तो कहीं पति द्वारा उपेक्षित है तो कहीं नारी पर माँ का व्यक्तित्व हावी हैं।

3.3 दांपत्य जीवन में नारी की स्थिति :-

मन्नू भंडारी ने अपनी अधिकतर कहानियों में दांपत्य जीवन का चित्रण किया है। इस

1. डॉ. ममता शुक्ला - मन्नू भंडारी के कथात्मक साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, पृष्ठ. 185
2. भैरूलाल गर्ग - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में समाज - परिवर्तन, पृष्ठ 127-128

चित्रण में उन्होंने पति-पत्नी के आपसी संबंध, एक-दूसरे को समझने की क्षमता, विश्वासघात, वैचारिक ताल-मेल, व्यवहारिकता, समझदारी आदि विविध विषयों को प्रस्तुत किया है।

मन्नू भंडारी लिखित 'दीवार बच्चें और बरसात' में रानी बीबी नामक प्रमुख पात्र को अपने पति का घर छोड़ना पड़ता है। रानी बीबी एक पढ़ी-लिखी नारी है। इसीलिए वह कुछ अच्छे ढंग से जिन्दगी बसर करना चाहती है। इसीलिए वह नौकरी करना चाहती है। परंतु पति द्वारा सहयोग न मिलने पर और उसके चरित्र पर लांच्छन लगाने पर उसे पति को छोड़कर जाना पड़ता है।

'कील और कसक' की नायिका रानी बड़ा ही अजीब वैवाहिक जीवन जीती है। रानी का विवाह कैलाश से होता है। कैलाश दिखने में कुरूप है। परंतु वह फिर भी पति को अपना सब कुछ मानकर उसे अपना पति स्वीकार करती है। परंतु पति के उपेक्षित व्यवहार से वह बहुत निराश होती है। विवाहित होते हुए भी उसे कुँवारी रहना पड़ता है। पति अपना सारा समय मशीनों के बीच काम करता हुआ बिताता है। रानी को सुहागरात को ही पति का उपेक्षित स्वभाव झेलना पड़ता है। रानी को जब एक दिन चोट लग जाती है तो बजाय उस पर सहानुभूति जताएँ , वह उसे ही डाँटते हुए कहता है - ''देखकर क्यों नहीं चलती हो। अब जाकर कपड़े बदलो, गीले कपड़े पहने यहाँ सबके सामने क्यों बैठी हो ?''[1] पति के एसे रूक्ष स्वभाव के कारण वह पति के मित्र शेखर की ओर आकर्षित होती है। पति में जिन गुणों की उसने आशा की थी, वे सभी गुण उसे शेखर में नजर आते हैं। परंतु शेखर का विवाह हो जाने के बाद उसे और ठेस पहुँचती है। वह शेखर से घृणा करने लगती है और उससे झगड़ने का मौका ढूँढती है। प्रा. किशोर गिरडकर रानी की अवस्था के विषय में लिखते हैं - ''अतृप्त यौन लालसाएँ नारी को परपुरूष की ओर आकृष्ट कराती है और वहाँ से भी प्रतिदान न पाकर स्वभावत: ही उसमें विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, तो ईर्ष्यालु और दुराग्रही बना देती है।''[2] पति के कारण रानी का दांपत्य जीवन निराशमय बन जाता है।

मन्नू जी की प्रसिद्ध कहानी 'ऊँचाई' जो विवादास्पद भी रही है, नारी के दांपत्य जीवन का एक अलग पहलू उजागर करती है।

---

1. मन्नू भंडारी -मैं हार गई, पृष्ठ. 120.

2. प्रा. किशोर गिरडक -मन्नू भंडारी की कथा-साहित्य, पृष्ठ. 46

कहानी की नायिका शिवानी अपने पूर्व प्रेमी अतुल से इसीलिए शारीरिक संबंध रखती है, क्योंकि वह अकेला है और उसे इस संबंध की आवश्यकता है। शिवानी विवाहित होते हुए भी ऐसा करती है। उसका मानना है कि उसने अपना एक कर्तव्य निभाया है। यह बात उसके पति शिशिर को अतुल के पत्र द्‌वारा मालूम होती है। शिशिर को क्रोध तो आता है। परंत बड़े ही शांत स्वर में कहता है - ''किस आधार पर विश्वास करूँ, कौन-सा कारण है, जो विश्वास न करूँ- तुम अपना शरीर तक एक पुरूष को दे आई और कैसे इतनी बड़ी बात को पचाकर बड़े स्वाभाविक ढंग से चल पड़ी ? ''[1] इस बात पर शिवानी उत्तर देती है कि- ''शरीर देने के बाद औरत के लिए अस्वाभाविक हो जाना क्या अनिवार्य ही है ? और छिपाने के पीछे भी तुम्हें धोखा देने या छलने का उद्देश्य कतई नहीं था।सिर्फ इसीलिए छिपाया था कि तुमसे सहा नहीं जाता, तुम बहुत कष्ट पाते। अतुल के पत्रों से ही तुम कहीं कचोट का अनुभव करते थे।''[2]

परपुरुष से संबंध होने के बावजूद भी शिवानी अपने आपको निर्दोष मानती है। इसे वह विश्वासघात भी नहीं मानती। शिवानी कहती है - ''यदि हमारे संबंधों का आधार इतना छिछला है, इतना कमजोर है कि वह हल्के से झटके को भी सँभाल नहीं सकता तो सचमुच उसे टूट ही जाना चाहिए।''[3] अपने इस संबंध को गलत न मानते हुए शिवानी कहती है - ''दर्द था तभी तो वह सब कर पाई जो एक नारी के लिए शायद असंभव ही होता। यदि मैं जरा-सा देकर किसी के जीवन में पूर्णता ला सकती हूँ, उसके आभावों को भर सकती हूँ, उसके सारे जीवन का रवैया बदल सकती हूँ, तो उसे देने में क्या हर्ज है ?''[4] शिवानी केवल दायित्व बोध के कारण इतना बड़ा कदम उठाती है। इस विषय में सुनंत कौर अपनी पुस्तक 'समकालीन हिन्दी कहानी : स्त्री-पुरूष संबंध'में लिखती हैं - ''शिवानी दांपत्य में शारीरिक पवित्रता के प्रश्न को अहम् मुद्दा बनाना उचित नहीं समझती। वह नैतिकता -अनैतिकता के निर्णय को परिस्थिति -सापेक्ष मानती है। ''[5] शिवानी के इन्हीं विचारों के सामने उसके पति शिशिर को झुकना पड़ता

---

1. मन्नू भंडारी -एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ. 130
2. वही, पृष्ठ. 130
3. वही, पृष्ठ. 131
4. वही, पृष्ठ -139
5. सुनंत कौर - समकालीन हिन्दी कहानी : स्त्री-पुरूष संबंध, पृष्ठ. 101

है क्योंकि शिवानी अपने पति को अधिक प्रेम करती। प्रेम की ऊँचाई पर वह अपने पति को बिठाती है।

'दरार भरनेकी दरार'कहानी में भृति और उसके पति में आई दरार को चित्रित किया गया है। परंतु उनका फिर आपस में मिलना, दांपत्य जीवन को टूटने से बचा लेता है।

'शायद' नामक कहानी में ऐसे दांपत्य जीवन का चित्रण किया गया, जहाँ संबंधों में रिक्तता आ चुकी है। राखाल काम के सिलसिले में तीन-चार साल तक घर नहीं जाता। परंतु जब वह घर आता है तो उसे अपनी पत्नी में परिवर्तन नजर आता है। माला अपने पति की भावना की कदर नहीं करती। "बीच में पहुँचते ही राखाल ने बक्सा सीढ़ी पर टिकाया और घुमकर अँधेरे में ही माला का हाथ पकड़कर जोर से दबाया। "चलो, चलो, यह गिर जाएगा।" हाथ छुड़ाते हुए माला ने कहा। उसके हाथ में कोई प्रतिक्रिया, कोई हरकत नहीं हुई। राखाल को माला का हाथ बड़ा सर्द और निर्जिव-सा लगा और वह ठंडक जैसे उसकी अपनी रगों में समाने लगी।"[1] राखाल बहुत दिनों बाद अपने घर आता है। इसीलिए वह अपनी पत्नी माला को अपने पास रखना चाहता है, जो कि स्वाभाविक है। परंतु माला को पति की इच्छा-आकांक्षा से कोई सरोकार नहीं है।

माला अपने पति से ठीक तरह से बात भी नहीं करती। उसके आते ही घर-बाहर का रोना लेकर बैठ जाती है। बार-बार पैसों की ही बात-चीत करती है। माला जैसी स्त्रियाँ पति को खुश करना नहीं जानती। शायद इसीलिए आपसी संबंधों में रिक्तता आ जाती है। सुनंत कौर इस विषय में लिखती हैं - "घर-परिवार की परेशानियों व आर्थिक समस्याओं ने जैसे माला का सारा उत्साह सोख लिया है। पति-पत्नी के संबंधों में एक ठंडापन-सा ला दिया है।"[2] माला स्वयं अपने दांपत्य जीवन में रिक्तता लाने के लिए जिम्मेदार है।

'नई नौकरी'में पति की नई नौकरी और इस नौकरी के कारण पति में आए परिवर्तन के कारण एक सुखद दांपत्य जीवन घुटन में परिवर्तित हो जाता है। रमा अपने छोटे-से परिवार में अत्यंत सुखी है। वह स्वयं लेक्चरर है। उसका एक बेटा भी है। उसके पति कुंदन को एक विदेशी कपंनी में अच्छी

---

1. मन्नू भंडारी -त्रिशंकु, पृष्ठ. 45

2.

नौकरी मिलती है। इसी कारण वह आराम की जिंदगी बसर करना चाहता है। इसीलिए वह आलिशान घर बनवाता है। और उसकी सजावट की जिम्मेदारी रमा को देता है। रमा पति की जल्दबाजी में थक जाती है। घर-बाहर सभी जगह वह बँट जाती है। पति में आए परिवर्तन से वह सोचती है -''जैसे कुंदन उसे पीछे अकेली छोड़कर आगे निकल गया है - --- बहुत आगे। जैसे वह अकेली रह गई है।''[1] रमा नए घर के काम-धाम और कालेज की नौकरी से तंग आकर नौकरी छोड़ने का निर्णय लेती है। उसका पति बजाय उसे मना करने के, उसे नौकरी छोड़ने को कहता है। रमा का पति चाहता है कि रमा नौकरी न करे। बस उसके ऑफिस के लोगों के लिए खाना बनाएँ, घर की सजावट में लगी रहे और उसके साथ पार्टी और क्लबों में जाए। रमा इस वातावरण से ऊब जाती है। वह कालेज के सहकर्मियों से मिलना चाहती है, पर मिल नहीं पाती। इस विषय में सुनंत कौर लिखती हैं, ''उसकी यह नई नौकरी धीरे-धीरे रमा की नौकरी व उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व का बलिदान चाहने लगी। अपनी सफलता व व्यक्ति विकास में कुंदन इस कदर डूब गया कि पत्नी की भावनाओं के प्रति वह पूर्णतया उदासीन हो गया।''[2] रमा और कुंदन के वैवाहिक जीवन में कुंदन की नई नौकरी और उसका व्यवहार जहर घोल देता है।

'बंद दराजों का साथ' में पत्नी का पति द्वारा किया गया विश्वासघात चित्रित किया गया है। विपिन और मंजरी का वैवाहिक जीवन विश्वासघात के कारण बिखर जाता है। मंजरी के मन में, जो विपिन के प्रति विश्वास था, वह यह जानकर टूट जाता है कि उसके जीवन में कोई अन्य स्त्री भी है और उस स्त्री से विपिन की एक बेटी है। इस कारण मंजरी को बहुत वेदना होती है कि उसके पति ने इतने दिनों तक उसे धोखे में रखा। धीरे-धीरे मंजरी पति से दूर होती जाती है। वह महसूस करती है - ''रोज की तरह विपिन ने उसे बाँहों में भर लिया था, पर जाने क्यों उसने भीतर ही भीतर महसूस किया कि उसके साथ सोनेवाला, उसे प्यार करनेवाला विपिन संपूर्ण नहीं है, केवल एक खण्ड हे, एक टुकड़ा।''[3] पति द्वारा दिए गए इस आघात के कारण मंजरी अपने आप में घुलती जाती है -''तब मंजरी अपने ही घर में बहुत अकेली हो उठी थी और सब कुछ बड़ा वीरान लगने लगा था। हर काम बोझ लगने लगा था। खाली समय और भी बोझिल। वह घंटो किताब खोले बैठी रहती थी, पर पक्तियाँ केवल आँखों के नीचे से गुजरती थी,

1. मन्नू भंडारी - एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ. 10
2. सुनंत कौर - समकालीन हिन्दी कहानी : स्त्री-पुरूष संबंध, पृष्ठ. 68
3. मन्नू भंडारी - एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ. 23

मन उनमें अछूता रहता था। ----विपिन से संबंध क्या गड़बड़ाया था, उसकी समस्त इन्द्रियों के आपसी संबंध गड़बड़ा गए थे।''[1] मंजरी की इस हालत का कारण था, वैवाहिक जीवन में विश्वासघात। यही विश्वासघात जाने कितने घर तोड़ देता ? सुनंत कौर ने पति-पत्नी के बीच इस विश्वासघात के विषय में सही लिखा है - ''अपने वैवाहिक जीवन में छाई इस तीसरी छाया को बदार्श करना, जब मंजरी के लिए असंभव हो गया तो उसने विपिन से अलगाव का निर्णय ले, दिलीप के साथ नया जीवन शुरू किया। परंतु बँटा हुआ जीवन जीने के अभिशाप से मंजरी का अतीत व उसका पुत्र असित 'तीसरा'बनकर उभरने लगे। पहले विपिन बँटा हुआ था, अब मंजरी बट गई।''[2]

मंजरी अपने पति के साथ नहीं रहती। मंजरी अलग रहकर अन्य मार्ग से सुख बटोरना चाहती है। परंतु उसे कहीं भी सुख नहीं मिलता। उसके जीवन में दिलीप नाम का व्यक्ति आता है। किंतु वह मंजरी के बेटे असित को अपना पुत्र नहीं मानता। मंजरी को एक बार फिर आघात पहुँचता है। इस कहानी में मन्नू जी ने दांपत्य जीवन में प्राप्त विश्वास पर प्रकाश डाला है और स्पष्ट किया है कि विश्वास के अभाव में वैवाहिक जीवन अधूरा है।

'तीसरा आदमी' में एक ऐसे दांपत्य का चित्रण किया, जो संतान सुख से वंचित है। शकुन का पति सतिश यह बात नहीं सहन कर सकता कि संतान प्राप्ती के लिए वह दोषी है। इसी कारण दोनों में दूरी निर्माण हो जाती है। शकुन, सतीश से कटी-कटी रहने लगती है। शकुन साहित्यिक आलोक को बहुत पसंद करती है। वह उसे घर बुलाती है। शकुन का आलोक को घर बुलाना, सतीश को भाता नहीं। वह उन दोनों को गलत समझता है। उन दोनों पर शक करता है। सतीश को लगता है, उसकी स्वयं की कमजोरी के कारण, उसकी पत्नी आलोक से संबंध बनाए हुए है। एक बार तो वह अपने ही घर के बाहर से चोरी छुपे शकुन और आलोक को देखने के लिए झाँकता है। उन दोनों में क्या चल रहा है, यह जानने के लिए वह उत्सुक रहता है। परंतु जब उसे अपनी गलती का पता चलता है, तो वह अपने आपको बहुत कोसता है।

प्रस्तुत कहानी में दांपत्य जीवन में बच्चें की कमी क्या से क्या मोड़ ले लेती है, इसका चित्रण है। पति अपनी पत्नी पर बिना किसी बात के ही शक करने लगता है।

---

1. मन्नू भंडारी - एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ. 24
2. सुनंत कौर - समकालीन हिन्दी कहानी : स्त्री-पुरूष संबंध, पृष्ठ. 24

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

'नकली हीरे' कहानी दो परिवारों की है। इस कहानी के द्वारा लेखिका यह स्पष्ट करना चाहती है कि सुखी जीवन के लिए ऐशो आराम, दौलत इत्यादि की अपेक्षा आपसी प्रेम अधिक महत्त्वपूर्ण है। कहानी की नायिका इंदु बड़े घर की बेटी है। परंतु वह अपनी इच्छा से एक प्रोफेसर से विवाह करती है। इस बात पर उसके घर के सदस्य उससे संबंध तोड़ देते हैं। एक साल बाद इंदु की बहन मिससे सरीन पिछला सब कुछ भुलाकर उसे अपने घर बुलाती है। वह इन्दू को अपने घर केवल इसीलिए बुलाना चाहती है, ताकि वह उसे अपनी बड़ी से बड़ी सभी सुविधाओं से युक्त कोठी दिखाएँ, अपनी शान-शौकत दिखाएँ। परंतु इंदु और उसके पति का अटूट प्रेम, मिससे सरीन के वैभव को फीका कर देता है। जबकि मिससे सरीन के पति के पास इतना भी समय नहीं है कि वह अपनी पत्नी से बात कर सके।

प्रस्तुत कहानी में मन्नू भंडारी दो अलग-अलग दांपत्य जीवन का चित्रण किया है। एक तरफ सामान्य आर्थिक स्थितिवाले दांपत्य जीवन में स्त्री को अपने पति का बहुत ही प्यार मिलता है, दूसरी तरफ वैभव के साथ जिंदगी बसर करनेवाले दांपत्य जीवन में पति-पत्नी एक-दूसरे से दूर हैं। स्त्री को भौतिक आनंद दिया जाता है, जबकि उसे भावनिक प्रेम की आवश्यकता होती है।

'बाँहो का घेरा' कहानी में एक ऐसी स्त्री की पीड़ा को चित्रित किया है, जो बचपन से यह चाहती है कि उसे कोई गले लगाकर बाँहों में भरकर प्यार करे -''किसी को बाँहों में भरकर अपने को उसमें लय कर देने की और उसका संपूर्ण पा लेने की अतृप्त दुर्दमनीय चाह, एक अभिशाप की तरह उसके मन पर छाई रहती है।''[1] परंतु कम्मो की यह इच्छा कभी पूरी नहीं होती। विवाह के उपरांत उसे पूरी आशा होती है कि उसकी यह इच्छा जरूर पूरी होगी। परंतु उसका पति मित्तल भी उसकी यह इच्छा पूरी नहीं करता। वह सपने देखती है कि उसके पति ने उसे बाँहों में भर लिया है। परंतु ऐसा नहीं होता - ''और फिर उसी इन्द्रजाल की माया के नीचे किसी की बलिष्ठ भुजाओं में कसी हुई वह ! पर वैसा कुछ भी नहीं हुआ। यों होने को सभी कुछ हुआ, पर कम्मो ने महसूस किया कि मित्तल बहुत जड़ है - बिल्कुल यांत्रिक। उमंग, उत्साह, प्यार की गर्मी, पागल बना देने वाली आतुरता कुछ भी तो नहीं था।''[2] कम्मो को हमेशा ऐसा

---

1. मन्नू भंडारी - एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ-97

2. वही, पृष्ठ. 103

लगता है कि - ''ऐसा हो जाए कि मित्तल की सारी जड़ता, सारी यांत्रिकता एक झटके से दूर हो जाए और वह पागलों की तरह उसे अपनी भुजाओं में कस ले, अपने सीने में सिमट ले और फिर उन्मत-सी वह उसके सिर को अपनी छाती में छिपा ले, उसके गले में बाँहें डाल दे- दोनों एक-दूसरे को पूर्ण कर दें। पर ऐसा कभी नहीं हुआ।''[1] पति से वह जैसा प्रेम चाहती थी, वह उसे नहीं मिला। पति के प्रेम से वह तृप्त नहीं हो पाई -''उसे कभी लगा ही नहीं कि मित्तल को उसकी चाहना है। यों आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए तो सब कुछ मशीनी ढंग से होता ही थी। पर वह तृप्त नहीं हो पाती थी, भावनाओं की मिठास जो नहीं थी।''[2]

कम्मो अपने पति से इतनी मामूली-सी बात नहीं पा सकती। उसकी यह दुर्दमनीय इच्छा उसे अंदर ही अंदर खाने लगती है। परंतु उसकी यह इच्छा उसका पुत्र शोन पूरी करता है। कम्मो की अतृप्त इच्छा के विषय में सुनंत कौर लिखती हैं - ''भावनाओं एवं प्यार की आँच के आस-पास जीवन गुजारने की इच्छा रखनेवाली कम्मो को जब पति से मनचाहा प्रेम नहीं मिल पाता तो वह अपने पुत्र को प्रेम देकर ही संतुष्ट होने का प्रयत्न करती है।''[3]

'नशा' कहानी में आनंदी के माध्यम से दांपत्य जीवन में नारी की अत्यंत दयनीय स्थिति को चित्रित किया गया है। आनंदी का पति शराबी है। वह कुछ काम-धाम नहीं करता। आनंदी के कमाए सारे पैसे शराब पर खर्च कर देता है। पैसे के लिए आनंदी के मना करने पर उसे बहुत पीटता है। आनंदी अपने दांपत्य जीवन में पशु की भाँति जीवन जीती है।

'कमरे कमरा और कमरे'नामक कहानी में पति-पत्नी के ऊबते संबंध को चित्रित किया गया है। नीलिमा एक लेक्चरर है। उसका श्रीनिवास के साथ प्रेम विवाह होता है। विवाह के बाद वह अपनी नौकरी छोड़ देती है। श्रीनिवास अपने काम के सिलसिले में हमेशा बाहर रहता है। इस कारण वह स्वयं को

---

1. मन्नू भंडारी - एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ. 109

2. वही, पृष्ठ. 108-109

3. सुनंत कौर- समकालीन हिन्दी कहानी : स्त्री-पुरूष संबंध, पृष्ठ.75

बहुत अकेली महसूस करती है - ''श्रीनिवास को अपने काम के सिलसिले में बाहर बहुत घुमना पड़ता था। शुरू में नीलिमा ने भी साथ जाना शुरू किया। दोहरा आकर्षण था -श्रीनिवास के साथ का और नयी-नयी जगह देखने का। पर जल्दी ही उसने जाना छोड़ दिया क्योंकि श्रीनिवास काम में लगा रहता था और वह अकेली-अकेली बोर होती थी।''[1] श्रीनिवास की व्यस्तता के कारण नीलिमा को पति का साथ बहुत कम मिलता था। वह अधुरा लिखा लेख पूरा करना चाहती है, ताकि वह छप सके। परंतु पति के कारण वह लिख नहीं पाती। इस विषय में सुनंत कौर लिखती हैं - ''मन्नू भंडारी की ही कहानी 'कमरे कमरा और कमरे' में नीलिमा, श्रीनिवास से विवाह कर लेक्चरर की नौकरी छोड़ देती है व पति के आग्रह पर रूचि न होने पर भी उसके व्यवसाय में हाथ बँटाती है। एक दिन अचानक एक पत्रिका में अपनी सहेली मीरा का लेख पढ़ने पर नीलिमा के मन की दबी इच्छा एकाएक साकार हो उठी। उसे अपनी किताबें अपनी रिसर्च, अपने लिखे पन्ने सब याद हो आए।''[2] आगे सुनंत कौर इस कहानी का उद् धरण देते हुए लिखती हैं - ''उसने सोचा कि एक बार फिर वह कुछ समय के लिए अपने को सब ओर से काटकर इसी काम में लगाएगी और जुटकर इन्हें 'रिवाइज' करके छपने भेज देगी।''[3] इस विचार से वह बहुत खुश होती है। परंतु श्रीनिवास के आनेपर और उसकी नीलू के सहयोग से व्यवसाय बढ़ाने की योजनाएँ सुनकर नीलू अपने मन की इच्छा व्यक्त ही नहीं कर पाती।''[4]

इन कहानियों के साथ ही दांपत्य जीवन में नारी की स्थिति का सही चित्रण 'आकाश के आईने में', 'सयानी बूआ', 'एक कमजोर लड़की की कहानी' आदि कहानियों में हुआ है।

3.4 कार्यालयों में नारी की स्थिति :-

कोई भी कार्यालय एक ऐसी जगह है, जहाँ एकत्रित हुए कर्मचारी अपने सुख तो बाँटते हैं, साथ ही वहाँ दु:ख भी बाँटा जाता है। किसी समस्या का समाधान भी कर्मचारी मिल बैठकर खोजते हैं। जब से स्त्रियों ने भी अपने पैरों पर खड़ा होना शुरू किया, तब से उनका भी संबंध प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कार्यालय से होता आया है। परंतु यदि कार्यालयों में नारी की स्थिति का अनुमान लगाया जाए तो

1. मन्नू भंडारी - एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ. 18
2. सुनंत कौर -समकालीन हिन्दी कहानी : स्त्री-पुरूष संबंध, पृष्ठ. 68
3. मन्नू भंडारी - एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ. 119
4. सुनंत कौर -समकालीन हिन्दी कहानी : स्त्री-पुरूष संबंध, पृष्ठ. 68

बहुत-सी स्थितियाँ ऐसी हैं, जहाँ नारी कार्यालयों में किसी न किसी से, किसी न किसी रूप में पीड़ित है। इसका प्रमाण हैं, मन्नू भंडारी लिखित निम्नलिखित कहानियाँ।

'स्त्री सुबोधिनी' कहानी में ऐसी अविवाहित स्त्री का चित्रण किया गया है, जो प्रौढ़ है। वह अपने बॉस के हाथों बर्बाद होती है। उसका बॉस विवाहित होते हुए भी उससे प्यार का नाटक करता है और उसे झूठे वचन देता है कि वह उससे विवाह करेगा। इसी आश्वासन के कारण वह प्रौढ़ कुमारिका अपना सर्वस्व उस पर न्यौछावर कर देती है। परंतु जल्द ही उसे पता चलता है कि वह उसे धोखा दे रहा है। इसीलिए वह उससे संबंध तोड़ देती है और अपनी गलती पर पश्चाताप करती है।

इस कहानी द्वारा स्पष्ट होता है कि कार्यालयों में नारी को वासना क्षमन की दृष्टि से देखा जाता है। उसे तरह-तरह के लालच देकर, उसके शरीर से खेला जाता है। जब प्रौढ़ कुमारिक उससे विवाह का आग्रह करती है तो वह कहता है - ''मैं जब- जब बहुत अधीर होती, वह समझाता कि सहजीवन का मधुरतम पक्ष तो हम भोग ही रहें हैं, मैं क्यों बेकार में शादी-ब्याह और घर में जकड़कर इस मधुर संबंध का गला घोंटना चाहती हूँ।''[1] शिन्दे जैसे कितने ही बॉस अपने अधिकार का फायदा उठाते हुए कार्यालय की स्त्री कर्मचारियों का जीवन बर्बाद करते हैं।

'क्षय' कहानी में एक ऐसी युवती का चित्रण किया गया है, जो घर की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए दो-दो जगह काम करती है। कुंती स्कूल में पढ़ाती भी है और शाम को नौवीं कक्षा की छात्रा को ट्यूशन देती है। परंतु कुंती का इस तरह छात्रा को उसके घर जाकर पढ़ाना कुंती के स्कूल की अन्य अध्यापिकाओं की आँखों में चुभता है। इसीलिए एक अध्यापिका कहती है- पैसे के जोर से नवीं कक्षा क्या मैट्रिक का सर्टिफिकेट भी मिल सकता है। और भई, हमने तो पहले ही कहा था कि ऐसी अच्छी टूयशन भाग्य से मिलती है। जब सामनेवाला खुशामद कर रहा है तो हमें क्या सीखे न सीखे, हमारी बला से, हम तो, जितना समय तय हुआ है, पढ़ाकर आ जाते ! अच्छा कुंती कितना लोगी ?''[2] कुंती को उनका इस तरह से बोलना अच्छा नहीं लगता।

---

1. मन्नू भंडारी - त्रिशंकु, पृष्ठ. 39
2. मन्नू भंडारी - यही सच है, पृष्ठ. 5

इस कहानी में स्पष्ट किया गया है कि कार्यालयों में एक स्त्री कर्मचारी से दूसरी स्त्री कर्मचारी किस प्रकार ईर्ष्या करती है।

3.5 शिक्षा क्षेत्र में नारी का स्थान :-

आज भले ही नारी, शिक्षा क्षेत्र में अपना एक निर्धारित स्थान बना चुकी है। परंतु आज भी ऐसी बहुत-सी स्त्रियाँ हैं, जो शिक्षा के अभाव में दर-दर की ठोकरे खाती हैं। कहीं कहीं तो स्त्री को इस क्षेत्र में उतरने का मौका भी नहीं दिया जाता, तो कहीं स्त्रियाँ शिक्षा की प्रबल इच्छा लिए शिक्षा क्षेत्र में ऊँचा स्थान प्राप्त करती है। मन्नू जी की कहानियों में हमें नारी का शिक्षा क्षेत्र में क्या स्थान हे, इसकी वास्तविक जानकारी उपलब्ध होती है।

मन्नू भंडारी की कहानी 'एक कमजोर लड़की की कहानी' में शिक्षा की प्रबल इच्छा रखनेवाली नारी की शिक्षा में आई समस्याओं का चित्रण हुआ है। रूप की स्कूली पढ़ाई छुड़वाकर उसके पिता, उसकी पढ़ाई घर पर शुरू करवाते हैं। वह घर में पढ़ाई करना नहीं चाहती। इसीलिए वह मन ही मन निर्धार करती है कि वह पिताजी से कहेगी कि - "मैं नहीं छोडूँगी स्कूल। मैं साफ-साफ पिताजी से कह दूँगी कि मैं घर में रहकर नहीं पढूँगी। घर में भी कहीं पढ़ाई होती है भला ! बस चाहे कुछ भी हो जाय मैं यह बात तो मानूँगी ही नहीं। आजकल कुछ बोलती नहीं हूँ तो इसका यह मतलब तो नहीं कि जिसकी जो मरजी हो वही करता चले।"[1] परंतु रूप से पिता के सामने कुछ बोला नहीं जाता। इस कारण उसकी पढ़ाई घर पर ही शुरू होती है। घर पर पढ़ाई शुरू होने के कारण रूप की सौतेली माँ घर का सारा काम धीरे-धीरे उसे सौंप देती है। रूप एक विद्यार्थी से गृहस्थीन बन जाती है। रूप की यह हालत देखकर उसके पिता उसे उसके मामा के घर पढ़ाई पूरी करने के लिए भेजने की तैयारी करते हैं। रूप अपना घर छोड़कर मामा के घर नहीं जाना चाहती। उसे लगता है कि उसे अपने ही घर से निकाला जा रहा है। न चाहते हुए भी रूप अपने मामा के घर चली जाती है। "जीती बाजी की हार' कहानी में ऐसी तीन सहेलियों का चित्रण किया गया है, जो पढ़ाई में बहुत रूचि रखती हैं और अपनी पढ़ाई की लालसा पूरी करती हैं। आशा, नलिनी और मुरला हमेशा किताबों में डूबे रहना पसंद करती हैं। तीनों की महत्त्वकांक्षा है कि वे ऊँची से ऊँची उपाधि पाए।

---

1. मन्नू भंडारी - मैं हार गई, पृष्ठ. 42

परंतु नलिनी को अपनी बी.ए. की परिक्षा दिए बिना ही घरवालों के दबाव में आकर विवाह करना पड़ता है। उसी तरह आशा को भी एम. ए के तुरंत बाद विवाह करना पड़ता है। मुरला मात्र पीएच. डी करने के उपरांत शिक्षा विभाग में एक ऊँचे पद पर नियुक्त होकर अविवाहित रहती है।

'सजा' नामक कहानी में आशा को परिवार पर आए संकट के कारण पूरी पढ़ाई करने का मौका नहीं मिलता। आशा के पिता को निर्दोष होते हुए भी मुकदमे का फैसला होने तक जेल में सजा काटनी पड़ती है। इस बीच आशा के परिवार आर्थिक तंगी के कारण बिखर जाता है। आशा को दसवीं की परिक्षा एक छोटे-से बिना हवा के कमरे में पढ़ाई कर के देनी पड़ती है। फिर भी वह द्‌वितीय श्रेणी में पास होती है। वह कालेज की पढ़ाई करना चाहती है, परंतु उसे अपनी चाची के यहाँ नौकरों की तरह काम करना पड़ता है।

मन्नू भंडारी की अन्य कहानियों में भी शिक्षा में नारी के स्थान का चित्रण हुआ है। जैसे - 'ईसा के घर इंसान', 'त्रिशंकु', 'क्षय' आदि।

3.6 आर्थिक व्यवहार / निर्णय में नारी का स्थान :-

मनुष्य को जीने के लिए जिन मूलभूत आवश्यकताओं की जरूरत पड़ती है, उन्हें पाने के लिए अर्थ की आवश्यकता पड़ती है। बिना आर्थिक प्राप्ति के मानव जीवन असंभव है। अर्थ प्राप्ति के लिए स्त्रियाँ भी पुरूषों के साथ काम करती हैं। परंतु आर्थिक व्यवहार में उसकी क्या भूमिका होती है, इसे जानना बहुत जरूरी है। अपने परिवार के लिए वह आर्थिक निर्णय ले पाती है या नहीं, यह बात महत्त्वपूर्ण है। मन्नू भंडारी की कुछ कहानियों में हमें इस बात का चित्रण प्राप्त होता है।

'शायद' कहानी की माला अपने परिवार का आर्थिक व्यवहार स्वयं देखती है। उसका पति राखाल जहाज पर काम करता है। इसीलिए वह दो-तीन साल में एक बार घर आता है। वह जब आता है, माला अपनी आर्थिक स्थिति को लेकर रोने बैठ जाती है। पति से अधिकतर पैसों के विषय में बोलती है - "इस बार शंकर के रूपये जरूर चुका देना। हर महीने बहुत काँट-छाँट करके भी दस रूपये नहीं दे पाती।"[1] माला अपने परिवार का खर्चा इधर-उधर से उधार मांगकर चलाती है। पति के आते ही सब

---

1. मन्नू भंडारी - त्रिशंकु, पृष्ठ. 50

हिसाब उसके सामने लेकर बैठ जाती है और कहती है ''तुम कितने रूपये लाए हो साथ में ? शंकर के तीन सौ रूपये और चुकाने हैं। बुलबुल की दस महीने की बीमारी ने तो मुझे तन-मन और धन से एकदम ही कंगाल बना दिया।''[1] माला अपने परिवार में स्वयं आर्थिक निर्णय लेते हुए घर गृहस्थी चलाती है।

'क्षय' एक ऐसी युवती की कहानी है, जो घर में बड़ी होने के कारण उसे स्वयं घर का सारा बोझ संभालना पड़ता है। इसमें उसके क्षयग्रस्त पिता है और स्कूल में पड़ता छोटा भाई है। वह घर खर्च के लिए स्कूल में नौकरी भी करती है और शाम को दो घंटे एक लड़की को ट्यूशन भी देती है - ''पिछले चार सालों से इस घर के लिए वही तो सब कुछ करती आयी है। वही तो पापा की पहली संतान है। शुरू से उसे लड़के की तरह ही पाला ------बचपन में वह लड़कों के साथ खेली, लड़कों के साथ पढ़ी और अब लड़कों की तरह इस घर को संभाल रही है।''[2] कुंती, पिताजी के इलाज और भाई की पढ़ाई को लेकर हमेशा चिंतित रहती है। कुंती के लिए घर का बढ़ता हुआ खर्च संभालना मुश्किल हो जाता है- ''कुंती भी क्या करती ? यों तो पापा की पेंशन, अपनी तनख्वाह और गांव के मकान के किराये से वह अच्छी तरह काम चलाती आ रही थी, पर बीमारी का यह अतिरिक्त खर्च और बीमारी भी अनिश्चित अवधि तक की ----''[3] घर खर्च अकेली उठाती उठाती थक जाती है। वह चाहती है कि उसका भाई जल्द ही बड़ा होकर यह आर्थिक जिम्मेदारी उससे ले ले।

'नशा', 'रानी माँ का चबूतरा' आदि कहानियों में भी आर्थिक व्यवहार/ निर्णय में नारी के स्थान का चित्रण हुआ है।

निष्कर्ष :-

विवेच्य कहानियों में नारी संवेदना के विविध स्तरों का अध्ययन करने के उपरांत, जो तथ्य हमारे सामने आते हैं उनसे यह जानकारी उपलब्ध होती है कि नारी किसी भी स्तर पर पूर्ण रूप से

---

1. मन्नू भंडारी - त्रिशंकु, पृष्ठ. 52

2. मन्नू भंडारी - यही सच है, पृष्ठ. 11

3. वही, पृष्ठ. 13

संतोषजनक अथवा उचित स्थिति में नहीं है। नारी की सामाजिक स्थिति से लेकर उसकी आर्थिक व्यवहार में जो स्थितियाँ हैं, वो संतोषजनक नहीं हैं। समाज में वह समाज के लोगों से पीड़ित है। समाज में नारी को प्राय: वासना क्षमन की दृष्टि से देखा जाता है। पढ़ी- लिखी नौकरी पेशा नारी को भी पुरूष की इच्छा या वासना का शिकार होना पड़ता है। परिवार में नारी की स्थिति ऐसी है कि उसे परिवार में महत्त्वपूर्ण समझा ही नहीं जाता।

दांपत्य जीवन में नारी की स्थिति मिली-जुली प्राप्त होती है। कहीं नारी यौन भावनाओं से अतृप्त है तो कहीं विवाहित होते हुए भी अपने प्रेमी से शारीरिक संबंध स्थापित करके पुरूष से तुलना करना चाहती है। किसी कहानी में दांपत्य जीवन में केवल आर्थिक व्यवहार ही महत्त्वपूर्ण नजर आता है, तो कहीं पति-पत्नी का निर्मल प्रेम भी।

कार्यालयों में तो नारी की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। वहाँ नारियों को बुरी नजर से ही देखा जाता है। शिक्षा क्षेत्र में भी नारियों का स्थान दयनीय है। आर्थिक व्यवहार में भी नारी स्वयं के लिए कुछ नहीं कर पाती। मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में नारी की जो विविध स्थितियाँ चित्रित की है, वह यथार्थ के धरातल पर की हुई नजर आती है।

****